Indian J. Soc. & Pol. 06 (02):91-92: 2019 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के आर्थिक चिंतन में राष्ट्रवाद

ममता मणि त्रिपाठी[1]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, श्री भगवान महावीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय,फाजिलनगर, कुशीनगर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

पंडित दीन दयाल उपाध्याय का चिंतन उच्च कोटि का तथा भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परिस्थितियों के अनुरुप है। दीन दयाल उपाध्याय भारतीय जनसंघ के नेता और भारतीय राजनीतिक एवं आर्थिक चिंतन को वैचारिक दिशा देने वाले पुरोधा थे। दीनदयाल जी समाजवाद और साम्यवाद को कागजी और अव्यावहारिक सिद्धान्त के रुप में देखते थे उनका स्पष्ट मानना था कि भारतीय प्ररिप्रेक्ष्य में ये विचार न तो भारतीयता के अनुरुप है और ना ही व्यावहारिक है। भारत को चलाने के लिए भारतीय दर्शन ही कारगर वैचारिक उपकरण हो सकता है, चाहे राजनीति का प्रश्न हो, चाहे अर्थव्यवस्था का प्रश्न सब की समाधानयुक्त विवेचना अपने वैचारिक लेखों में की है। भारतीय राजनीति कैसी हो, इसका स्वरुप क्या हो, इन सारे विषयों को पंडित दीन दयाल उपाध्याय नें भारतीय अर्थनीति विकास की दिशा में रखा है।

KEYWORDS: *दीन दयाल उपाध्याय, राष्ट्रवाद, अर्थनीति,*

पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने लिखा है कि ''देश का द्रारिद्रय दूर होना चाहिए इसमें दो मत नही किन्तु प्रश्न यह है कि गरीबी कैसे दूर हो, हम अमेरिका के मार्ग पर चलें या रुस के मार्ग पर अथवा यूरोपिय देशों का अनुकरण करें। सभी ने मशीनों को ही आर्थिक प्रगति का साधन माना है। मशीन का सर्वप्रधान गुण है कम मनुष्यों द्वारा अधिकतम उत्पादन करवाना। परिणामतः इन देशों को स्वदेश में बढ़ते हुए उत्पादन को बेचने के लिए विदेशों में बाजार ढूढ़ने पड़े। हमें स्वीकार करना होगा कि भारत की आर्थिक प्रगति का रास्ता मशीन का रास्ता नही है। .... कुटीर उद्योगों को भारतीय अर्थनीति का आधार मानकर विकेन्द्रित अर्थव्यवसीा का विकास करने से ही देश की आर्थिक प्रगति संभव है।''(पांचजन्य, 12 दिसं0 1955)

दीन दयाल उपाध्याय की महत्वपूर्ण मान्यता व्यक्ति के संबंध में है उनके अनुसार पूँजीवादी अर्थशास्त्र मनुष्य को एक अर्थलोलुप प्राणी मानकर चलता है। उसके सभी निर्णय आर्थिक दृष्टिकोण से होते हैं .... वह अर्थोत्पादन की प्रेरणा से ही काम करता है।(उपाध्याय, 1998 पृ090) दूसरी ओर मार्क्स तथा साम्यवादी व्यवसीा में मनुष्य को रोटीमय बना दिया। दोनों व्यवस्थाएँ व्यक्ति के प्रजातंत्रीय अधिकार एवं उसके स्वस्थ विकास के प्रतिकूल है। दीन दयाल उपाध्याय जी लोकतंत्र को केवल राजनीतिक जीवन का आयाम नही मानते। उनका मत है कि 'प्रत्येक को वोट' जैसे राजनीतिक प्रजातंत्र का निष्कर्ष है वैसे ही 'प्रत्येक को काम' यह आर्थिक प्रजातंत्र का मापदण्ड है। अतः दीन दयाल उपाध्याय जी मानते हैं कि 'प्रत्येक को काम' का अधिकार मिलना चाहिए। दीन दयाल जी का आग्रह स्वदेशी, स्वावलम्बी एवं विकेन्द्रित अर्थतंत्र एवं उत्पादन तंत्र अपनाने पर था। उपाध्याय जी राष्ट्रीय औद्योगिक क्षेत्र में विदेशी पूँजी के बल पर औद्योगीकृत नहीं किया जाना चाहिए विदेशी पूँजी के राजनैतिक के अलावा आर्थिक प्रभाव भी अशुभ होते हैं। विदेशी पूँजी का विनियोग स्वदेशी श्रम का शोषण करता है। .... बड़े उद्योग व विदेशी पूँजी का विनियोग हमारे यहाँ पश्चिमी प्रकार के शोषणवादी पूजीवाद को उत्पन्न करेगा। पूजीवाद के सभी दोषों का हमारे समाज में प्रवेश हमारी सामाजिक संस्कृति के लिए बहुत विषैला होगा। उपाध्याय जी मनुष्य तत्व पर मशीन के हावी हो जाने के विरोधी हैं। उनका मत है– ''......... जहाँ एक ओर मशीन के श्रद्धालु भक्त हैं तो दूसरी ओर कट्टर दुश्मन भी मौजूद है। एक मशीन के अभिनवीकरण के अभाव को ही भारत की गरीबी का कारण मानकर चलते है तो दूसरे अभिनवीकरण और यंत्रीकरण को ही देश के विनाश के लिए जिम्मेदार मानते हैं। वास्तव में मशीन न तो मनुष्य का शत्रु है न मित्र। वह एक साधन है तथा उसकी उपादेयता समाज की अनेक शक्तियों की क्रिया–प्रतिक्रिया पर निर्भर करती है। दीनदयाल जी कहते हैं ''हमारी मशीन हमारी आर्थिक आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं, अपितु हमारे सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन मूल्यों की पोषक नही तो कम से कम अविरोधी अवश्य होनी चाहिए।'' इस तरह दीन दयाल उपाध्याय न तो मशीन के भक्त थे और न विरोधी। वे मशीनों को समाज एवं अर्थव्यवस्था पर हावी नही होने देना चाहते थे।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी मानते है किसान के स्वामित्व के आधार पर खेती का पुर्ननियोजन की व्यावहारिक व हमारी मानसिक रचना के अनुकूल है। जापान एवं अन्य देशों में इससे सर्वाधिक अच्छा परिणाम निकला है। पोलैण्ड को सहकारिता कृषि के प्रयोग में असफलता प्राप्त करने के बाद फिर से इसी पद्धति का सहारा लेना पड़ा। (उपाध्याय,1991 पृ039) अतः उपाध्याय जी बड़े उद्योगों के आधार पर रचित अर्थव्यवस्था को भारतीय परिस्थिति में उचित नही समझते थे। कृषि के क्षेत्र में छोटे तथा स्वामित्ववान खेतों के हिमायत थे।दीन दयाल उपाध्याय जी उद्योगों में समुचित प्रकार की विभिन्नता लाना चाहते थे उनका दृढ़ मत था कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर आधारित ऐसे उद्योग स्थापित किये जाए जिसमें स्वदेशी शिल्प विज्ञान के प्रयोग के साथ विद्युत की उत्पादन प्रक्रियाओं के विकेन्द्रीकरण पर अधिक बल देते हुए गाँव के प्रत्येक घर को उत्पादन का केन्द्र बनाया जाए। कृषि के समुचित विकास के लिए उन्नत बीज, खाद एवं उर्वरक, कीट व्याधिनाशक रसायन, सिचाई व्यवस्था, उन्नत विकसित विधाओं का वास्तविक उपज से अधिक मूल्य की उपलब्धि,

1: Corresponding Author

गतिशील सुव्यवस्थित विपणन व्यवस्था विशेष रुप से उत्तरदायी है।(उत्तर प्रदेश संदेश,सितं01991)

विकास के आयातित सिद्धान्त की आलोचना में पं0 जी के विचार उल्लेखनीय है उन्होंने भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा नामक अपनी पुस्तक में कहा है कि स्वतंत्रता के बाद हमारे दृष्टिकोण मे अन्तर आया है। अब हम प्रत्येक प्रश्न को आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं। उनका मानना था कि हमारी परंपरा और संस्कृति हमें यह बताती है कि मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं तथा इच्छाओं का पिंड नही अपितु एक आध्यात्मिक तत्व है ....देश और काल की विभिन्न परिस्थितियों के कारण भी हमारे विकास का मार्ग पश्चिम से भिन्न होना चाहिए। हम मार्शल और मार्क्स से बुरी तरह बंध गए हैं। अर्थशास्त्र के जिन नियमों की उन्होंने विवेचना की है हम उन्हें शाश्वत मानकर चल रहें हैं। पंडित जी ने भारतीयता की जिस विचारधारा को एकांगी और आयातित मानकर खारिज करते हैं भारतीयता की जिस विकासवादी दृष्टिकोण को अपने सिद्धान्तों में प्रतिपादित किया, अपने कार्यकाल के तीन वर्ष पूरा होने पर न्यू इण्डिया के तहत तय लक्ष्यों की पूर्ति के लिए संकल्प लेते हुए वर्ष 2022 तक पूरा करने की मंशा जतायी। उनका कहना था कि न्यू इण्डिया के संकल्प का यही सही समय है। हम सब मिलकर एक ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जहाँ गरीब के पास पक्का घर होगा, बिजली होगी, पानी होगा, देश का किसान चिंता से नही चैन से सोयेगा। दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत अन्त्योदय की अवधारणा में मनुष्य को आर्थिक प्राणी के रुप में देखकर उसकी तमाम जरुरतों की पूर्ति का समग्रता में चिंतन किया गया। शासन की नीतियाँ जब कतार पर बैठे अंतिम व्यक्ति की समग्र जरुरतों को ध्यान में रखते हुए बनाई जाए और उसकी पहुँच को उस समय तक सुनिश्चित किया जाए तब जाकर सही मायने में अन्त्योदय की अवधारणा को व्यावहारिक जामा पहनाया जा सकता है। दीन दयाल जी का मानना था कि अर्थ की अति प्रधानता और अर्थ का अभाव दोनों ही उचित नही है। आज अर्थ तंत्र का मूल्यांकन करें तो समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा एक विशाल तबका मुख्य धारा से लाभान्वित नही हो पा रहा है। बैंकिंग क्षेत्र के राष्ट्रीयकरण के बावजूद एक वर्ग ऐसा था जो बैंक खाता नही खोल पाया है। 2011 की जनगणना तक 42 फीसदी परिवार क`पास एक भी बैंक खाता नही था। 28 अगस्त 2014 को प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री जनधन योजना की शुरुआत की, वर्तमान समय में जनधन योजना के तहत लगभग 25 करोड़ लोगों को बैंक खाते के माध्यम से अर्थतंत्र का हिस्सा बनाया गया है। देश की अर्थ व्यवस्था में आम गरीब लोगों की भागीदारी सुनिश्चित हो गयी है।अंतिम व्यक्ति को अर्थतंत्र से जोड़ने का प्रयास किया गया। आज स्वच्छता जन आन्दोलन बन गई है। इसके अंतर्गत ग्रामीण स्वच्छता कवरेज में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अक्टूबर 2014 में 39 प्रतिशत से 2018 में 95 प्रतिशत हो गयी है।

पिछले दो ढाई दशक में जिस रफ्तार से भारत में विकास हुआ है उसकी तुलना में गरीबी तथा असमानता की रफ्तार कम नही हुई है। आज भी 30 करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं लेकिन सूचकांक में यह व्यक्त किया गया है कि भारत में गरीबी दर 10 साल की अवधि में 55 प्रतिशत से घटकर 28 प्रतिशत हो गया है। भुखमरी में भारत की स्थिति बहुत ही खराब है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत को 119 देशो ंकी सूची में 103वाँ स्थान मिला है। सूचकांक में भारत को गंभीर वर्ग में रखा गया है। वर्ष 2009 से नौकरियों की कमी होती जा रही है। केन्द्र सरकार ने छोटे उद्यम शुरु करने के लिए प्रधानमंत्री मुद्रा योजना शुरु की। इसके तहत लोगों को अपना उद्यम शुरु करने के लिए छोटी रकम का लाभ दिया जाता है। मुद्रा योजना की खास बात है कि इसके तहत लोन लेने वाले लोगों में 3 महिलाएँ हैं। 23 मार्च 2018 तक 228144 करोड़ लोन मंजूर किये गए हैं। दीन दयाल ग्राम ज्योति योजना की शुरुआत हुई थी तब 1275 गाँव ऐसे थे जिनमें अंधेरा था, ऐसे घरों में प्रकाश का प्रबंध किया गया। 17 अप्रैल 2016 तक 5684 अतिरिक्त गाँवों का विद्युतीकरण किया गया। सरकार किसानों के लिए चिंतित है। प्रधानमंत्री फसल बीमा से किसानों को लाभ मिला है। फसल में से किसी नुकसान की स्थिति में किसानों को बीमा कवर और वित्तीय सहायता देने का प्रावधान किया गया। कृषि क्षेत्र में ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। प्रधानमंत्री उज्जवला योजना देश के सभी घरों तक एल0पी0जी0 कनेक्शन पहुँचाने के लिए एक बड़ी कोशिश है। इन योजनाओं की सहायता से सरकार गरीबी रेखा से नीचे के कम से कम 5 करोड़ परिवारों तक एल0पी0जी0 गैस कनेक्शन पहुँचाने का प्रयत्न कर रही है। इस तरह दीन दयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद का उद्देश्य स्वदेशी, सामाजिक आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करना है जिसके विकास के केन्द्र में मानव हो। सामाजिक आर्थिक रुप से जब व्यक्ति का उत्थान होगा तो व्यक्ति–व्यक्ति मिलकर समाज का उत्थान करेंगे और फिर राष्ट्र समाज के माध्यम से उत्थान करने की ओर अग्रसर होगा। दीन दयाल उपाध्याय जी ने कहा है ''विश्व का ज्ञान और आज तक की अपनी संपूर्ण परंपरा के आधार पर हम ऐसा भारत निर्माण करेंगे जो हमारे पूर्वजों के भारत से अधिक गौरवशाली होगा जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता हुआ संपूर्ण मानव ही नही अपितु सृष्टि के साथ साक्षात्कार कर नर से नारायण बनने में समर्थ होगा।

REFERENCES:

कुलकर्णी शरद अनन्त (1987) *'पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन'* खण्ड 4 नई दिल्ली, सुरुचि प्रकाशन

पिलानी शेखावटी जनसंघ सम्मेलन में पं0दीनदयाल उपाध्याय जी का उद्घाटन भाषण, *पाँचजन्य* 12 दिसम्बर 1955

उपाध्याय दीन दयाल (1998) *'भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा'* लखनऊ, राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन

उपाध्याय दीनदयाल (1991) *पालिटिकल डायरी,* नई दिल्ली, सुरुचि प्रकाशन

त्रिपाठी नाथ कैलाश 'भारतीय कृषि एवं उद्योग पर दीनदयाल जी के विचार' सितम्बर 1991 *उत्तर प्रदेश संदेश*

योजना अक्टूबर 2017